तत्त्वार्थसूत्र

परिचय - पुनरावर्तन

मूलसूत्र

हितोपदेशी — वीतरागी

मोक्षमार्गस्य नेतारं भेत्तारं कर्मभूभृताम् ।

ज्ञातारं विश्वतत्त्वानां वन्दे तद्गुणलब्धये ॥

सर्वज्ञ — प्रयोजन - भावना

मतिज्ञान की उत्पत्ति के समय निमित्त

तदिन्द्रियानिन्द्रियनिमित्तम् ॥ १४ ॥

अर्थ - [इन्द्रियानिन्द्रिय] इन्द्रियाँ और मन [तत्] उस मतिज्ञान के [निमित्तम्] निमित्त हैं।

मतिज्ञान के क्रम के भेद

अवग्रहेहावायधारणाः ॥ १५ ॥

अर्थ - [अवग्रह ईहा अवाय धारणाः] अवग्रह, ईहा, अवाय और धारणा, यह चार भेद हैं।

अध्याय १: सूत्र १५ - मतिज्ञान के क्रम के भेद

अवग्रहेहावायधारणाः ॥ १५ ॥ - अवग्रह का स्वरूप

अवग्रह (Perception) – चेतना में जो थोड़ा विशेषाकार भासित होने लगता है, उस ज्ञान को 'अवग्रह' कहते हैं। विषय और विषयी (विषय करनेवाले) के योग्य स्थान में आ जाने के बाद होनेवाला आद्यग्रहण अवग्रह है। स्व और पर दोनों का (जिस समय जो विषय हो उसका) पहिले अवग्रह होता है।

अवग्रहेहावायधारणा: ॥ १५ ॥ - ईहा का स्वरूप

ईहा (Conception) – अवग्रह के द्वारा जाने गए पदार्थ को विशेषरूप से जानने की चेष्टा (आकाँक्षा) को ईहा कहते हैं।

अध्याय १: सूत्र १५ - मतिज्ञान के क्रम के भेद

अवग्रहेहावायधारणा: ॥ १५ ॥ - अवाय का स्वरूप

अवाय (Judgement) – विशेष चिह्न देखने से उसका निश्चय हो जाए, सो अवाय है।

अध्याय १: सूत्र १५ - मतिज्ञान के क्रम के भेद

अवग्रहेहावायधारणा: ॥ १५ ॥ - धारणा का स्वरूप

धारणा (Retention) – अवाय से निर्णीत पदार्थ को कालान्तर में न भूलना, सो धारणा है।

अध्याय १: सूत्र १३-१५ पर पदार्थ सम्बन्धी मतिज्ञान

मति -- मनन -- [पर सम्बन्धी → अवग्रह → ईहा → अवाय → धारणा]

स्मृति -- स्मरण -- धारणा अनिवार्य

संज्ञा -- जोडरूप ज्ञान -- प्रत्यभिज्ञान

चिंता -- व्याप्ति ज्ञान -- तर्क

अभिनिबोध -- अनुमान ज्ञान

[१] तत्त्वार्थमणिप्रदीप , प्रथम संस्करण , डॉ० हुकमचन्द भारिल्ल

अध्याय १: सूत्र १३-१५ स्व [आत्मा] सम्बन्धी विकल्पात्मक मतिज्ञान

मति -- मनन -- [स्व सम्बन्धी → अवग्रह → ईहा → अवाय → धारणा]

↓

स्मृति -- स्मरण -- धारणा अनिवार्य

↓

संज्ञा -- जोडरूप ज्ञान -- प्रत्यभिज्ञान

↓

चिंता -- व्याप्ति ज्ञान -- तर्क

↓

अभिनिबोध -- अनुमान ज्ञान

[१] तत्त्वार्थमणिप्रदीप , प्रथम संस्करण , डॉ॰ हुकमचन्द भारिल्ल

अध्याय १: सूत्र १५ - मतिज्ञान के क्रम के भेद

अवग्रहेहावायधारणाः ॥ १५ ॥ - स्व [आत्मा] सम्बन्धी विकल्पात्मक मतिज्ञान

- जीव को अनादि काल से अपने स्वरूप का भ्रम है, इसलिए पहिले आत्मज्ञानी पुरुष से आत्मस्वरूप को सुनकर, युक्ति के द्वारा यह निर्णय करना चाहिए कि आत्मा ज्ञानस्वभाव है, तत्पश्चात् —

अवग्रहेहावायधारणाः ॥ १५ ॥ - स्व [आत्मा] सम्बन्धी विकल्पात्मक मतिज्ञान

- परपदार्थ की प्रसिद्धि के कारण-इन्द्रिय द्वारा तथा मन द्वारा प्रवर्तमान बुद्धि को मर्यादा में लाकर, अर्थात् परपदार्थों की ओर से अपना लक्ष्य खींचकर,
- जब आत्मा स्वयं स्वसन्मुख लक्ष्य करता है, तब प्रथम सामान्य स्थूलतया आत्मा सम्बन्धी ज्ञान हुआ, वह आत्मा का **अर्थावग्रह** हुआ;

अवग्रहेहावायधारणाः ॥ १५ ॥ - स्व [आत्मा] सम्बन्धी विकल्पात्मक मतिज्ञान

- तत्पश्चात् स्व-विचार के निर्णय की ओर उन्मुख हुआ, सो ईहा और निर्णय हुआ, सो अवाय, अर्थात् ईहा से ज्ञात आत्मा में 'यह वही है, अन्य नहीं'—ऐसा दृढ़ ज्ञान, अवाय है।
- आत्मा सम्बन्धी कालान्तर में संशय तथा विस्मरण न हो, सो धारणा है। यहाँ तक तो मतिज्ञान में धारणा तक का अन्तिम भेद हुआ।

अवग्रहेहावायधारणा: ॥ १५ ॥ - स्व [आत्मा] सम्बन्धी विकल्पात्मक मतिज्ञान

- इसके बाद यह आत्मा अनन्त ज्ञानानन्द शान्तिस्वरूप है, इस प्रकार मति में से प्रलम्बित तार्किक ज्ञान, **श्रुतज्ञान** है।
- भीतर स्वलक्ष्य में मन-इन्द्रिय निमित्त नहीं है। जब जीव उससे-अंशतः पृथक् होता है, तब स्वतन्त्र तत्त्व का ज्ञान करके उसमें स्थिर हो सकता है।

अध्याय १: सूत्र १५ - मतिज्ञान के क्रम के भेद

अवग्रहेहावायधारणा: ॥ १५ ॥ - स्व [आत्मा] सम्बन्धी विकल्पात्मक मतिज्ञान

- अवग्रह या ईहा हो, किन्तु यदि वह लक्ष्य चालू न रहे तो आत्मा का निर्णय नहीं होता, अर्थात् अवाय ज्ञान नहीं होता; इसलिए अवाय की अत्यन्त आवश्यकता है।

- यह ज्ञान होते समय विकल्प, राग, मन या परवस्तु की ओर लक्ष्य नहीं होता, किन्तु स्वसन्मुख लक्ष्य होता है।

अवग्रहेहावायधारणाः ॥ १५ ॥ - स्व [आत्मा] सम्बन्धी विकल्पात्मक मतिज्ञान

- सम्यग्दृष्टि को अपना (आत्मा का) ज्ञान होते समय इन चारों प्रकार का ज्ञान होता है। धारणा तो स्मृति है। जिस आत्मा को सम्यग्ज्ञान अप्रतिहत (निर्बाध) भाव से हुआ हो, उसे आत्मा का ज्ञान, धारणारूप बना ही रहता है ॥१५ ॥

तत्त्वार्थसूत्र

अध्याय १ सूत्र १५

022 - 2663 1165 | +91 96195 04576 | parlajinmandir@gmail.com | www.parlajinmandir.org | /Parla.Jinmandir | /c/ParlaJinmandir

आगे की विषय-वस्तु....

विषय-वस्तु	सूत्र क्रमांक	कुल सूत्र
अब सम्यग्ज्ञान के भेद कहते हैं --	९	१
कौन से ज्ञान प्रमाण है ?	१०	१
परोक्ष एवं प्रत्यक्ष प्रमाण के भेद	११-१२	२
मतिज्ञान के दूसरे नाम	१३	१
मतिज्ञान की उत्पत्ति के समय निमित्त -	१४	१
मतिज्ञान के क्रम के भेद तथा उनका स्वरूप	१५-१९	५
श्रुतज्ञान का वर्णन, उत्पत्ति का क्रम तथा उसके भेद	२०	१

तत्त्वार्थसूत्र

अध्याय १ सूत्र १६

अवग्रहादि के विषयभूत पदार्थ

बहुबहुविधक्षिप्रानिःसृतानुक्तध्रुवाणां सेतराणां ॥ १६ ॥

अर्थ – [अवग्रह ईहा अवाय धारणाः] अवग्रह, ईहा, अवाय और धारणा, यह चार भेद हैं। [बहु] बहुत [बहुविध] बहुत प्रकार [क्षिप्र] जल्दी [अनिःसृत] अनिःसृत [अनुक्त] अनुक्त [ध्रुवाणां] ध्रुव [सेतराणां] उनसे उल्टे भेदों से युक्त अर्थात् एक, एकविध, अक्षिप्र, निःसृत, उक्त, और अध्रुव; इस प्रकार बारह प्रकार के पदार्थों का अवग्रह ईहादिरूप ज्ञान होता है।

जिनवाणी स्तुति